विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -01-09-2020**

विषय -हिन्दी (व्याकरण) **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों कल आप लोग सकर्मक के बारे में अध्ययन किए थे ,आज अकर्मक के बारे में अध्ययन करेंगे ।

2. अकर्मक क्रिया - जिस क्रिया में कर्म नहीं पाया जाता है। वह अकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे-प्रणव इंजीनियर है।

संरचना के आधार पर क्रिया के.भेद

संरचना के आधार पर क्रिया के चार भेद होते हैं

- संयुक्त क्रिया
- नामधातु क्रिया
- प्रेरणार्थक क्रिया
- पूर्वकालिक क्रिया।

(i) संयुक्त क्रिया - दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर जब किसी एक पूर्ण क्रिया का बोध कराती हैं, तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे-बच्चे दिनभर खेलते रहते हैं।
(ii) नामधातु क्रिया - संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण आदि शब्दों से बनने वाली क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं; जैसे-बात से बतियाना, अपना से अपनाना, नरम से नरमाना।
(iii) प्रेरणार्थक क्रिया - जिस क्रिया को कर्ता स्वयं न करके दूसरों को करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। प्रेरणार्थक क्रिया में दो कर्ता होते हैं।

- प्रेरक कर्ता-प्रेरणा देने वाला, जैसे-मालिक, अध्यापिका आदि।
- प्रेरित कर्ता-प्रेरित होने वाला अर्थात जिसे प्रेरणा दी जा रही है; जैसे-नौकर, छात्र आदि।

प्रेरणार्थक क्रिया के दो रूप हैं।

- प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया
- वितीय प्रेरणार्थक क्रिया।

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया प्रत्यक्ष होती है तथा द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया अप्रत्यक्ष होती है।

(iv) पूर्वकालिक क्रिया - जिस वाक्य में मुख्य क्रिया से पहले यदि कोई क्रिया आ जाए, तो वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती हैं।

- पूर्वकालिक क्रिया का शब्दिक अर्थ है-पहले समय में हुई।
- पूर्वकालिक क्रिया मूल धातु में कर अथवा करके लगाकर बनाई जाती है; जैसे-चोर सामान चुराकर भाग गया। छात्र ने पुस्तक से देखकर उत्तर दिया।

गृहकार्य

नामधातु क्रियाएँ बनाइए –

(क) साठ ----------

(ख) अपना ----------

(ग) फिल्म ----------

(घ) हाथ ----------

(ङ) शर्म ----------

(च) गरम ----------

(छ) हिनहिन ----------